सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-29 अंक-7 7 से 21 अप्रैल, 2014 मुख्य संपादक कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com मूल्य : 2 रुपये

देश भर में सम्मानपूर्वक मनाया गया
23 मार्च – शहीद भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव का शहादत दिवस

दिल्ली: इस वर्ष एसयूसीआई(सी) दिल्ली राज्य सांगठनिक कमेटी ने शहीद भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव का शहीद दिवस व्यापक पैमाने पर मनाने का फैसला लिया जिसके तहत दिल्ली के विभिन्न इलाकों में सप्ताह भर के कार्यक्रम लिए गए। जगह-जगह नुक्कड़ सभाओं, नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया गया। 20 हजार से भी अधिक पर्चे बाँटे गए। लोकल कमेटियों द्वारा अपने-अपने इलाकों में 23 मार्च को बुराड़ी, सोनिया विहार, लोनी, शालीमार बाग, कोटला गाँव (पूर्वी दिल्ली) मे जन श्रद्धांजली कार्यक्रम लिया गया जहाँ सैकड़ों लोगों ने शहीदों के चित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

23 मार्च को एआईडीएसओ की तरफ से करोल बाग में फिल्म शो व शहीद भगत सिंह की तस्वीर पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर 'द लेजेण्ड ऑफ भगत सिंह' फिल्म दिखाई गई। इलाके के कई छात्रों ने कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन एआईडीएसओ की कार्यकर्ता सौम्या ने किया। अंत में एआईडीएसओ के दिल्ली राज्य कार्यालय सचिव कॉ. राहुल सरकार द्वारा फिल्म पर आधारित चर्चा के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

उत्तर-पूर्वी दिल्ली के नन्द नगरी इलाके में एसयूसीआई(सी) की ओर से एक राज्य स्तरीय जनसभा की गई। सभा के मुख्य वक्ता पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती थे। सभा की अध्यक्षता राज्य कमेटी के सचिव मण्डल सदस्य कॉमरेड प्राण शर्मा ने की। सभा को दिल्ली राज्य कमेटी के सचिव कॉमरेड प्रताप सामल तथा उत्तर-पूर्वी दिल्ली संसदीय क्षेत्र से पार्टी के उम्मीदवार प्रो. नरेन्द्र शर्मा ने सम्बोधित किया। सभा का संचालन एसयूसीआई(सी) दिल्ली राज्य कमेटी के सचिव मण्डल सदस्य कॉ. रमेश शर्मा द्वारा किया गया। सभा की शुरूआत सांस्कृतिक कार्यक्रम से हुई जिसमें क्रान्तिकारी गीत प्रस्तुत किए गए। सभा के अन्त में कॉ. जी.एस.सिंह द्वारा निर्देशित 'भगत सिंह लौट के आ' नाटक का मंचन किया गया। सभा में दिल्ली के विभिन्न इलाकों से आए 400 से ज्यादा लोगों ने हिस्सा लिया।

सभा को सम्बोधित करते हुए पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती

(शेष पृष्ठ 2 पर)

आगामी लोकसभा चुनाव में एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) पार्टी के उम्मीदवारों को विजयी बनाएं

दिल्ली

प्रोफेसर नरेन्द्र शर्मा : उत्तर-पूर्वी दिल्ली

दिल्ली विश्वविद्यालय के ज़ाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज में 43 वर्ष तक राजनीति शास्त्र के प्राध्यापक रहे प्रोफेसर नरेन्द्र शर्मा बहुत लम्बे समय से पार्टी द्वारा संचालित आन्दोलनों में अहम भूमिका निभाते आ रहे हैं। वे ऑल इण्डिया सेव एजूकेशन कमेटी की दिल्ली शाखा के अध्यक्ष व अखिल भारतीय कमेटी में अध्यक्ष मण्डल के सदस्य हैं। ऑल इण्डिया एण्टी इम्पीरियलिस्ट फोरम के भी दिल्ली राज्य अध्यक्ष व अखिल भारतीय कमेटी के उपाध्यक्ष हैं। इसके अलावा, दिल्ली में 'पानी निजीकरण-व्यापारीकरण प्रतिरोध कमेटी' के दिल्ली प्रदेश उपाध्यक्ष हैं और शहीद व मनीषी यादगार कमेटी के दिल्ली राज्य संयोजक हैं। प्रोफेसर नरेन्द्र शर्मा विभिन्न मंचों से जनता के जनवादी आन्दोलनों को आगे बढ़ाने में निरन्तर सक्रिय हैं।

हरियाणा

जयकरण माण्डौठी : रोहतक

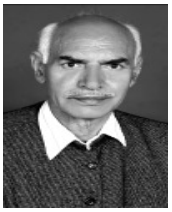

जयकरण माण्डौठी पिछले 44 सालों से समर्पित भावना से लोगों के हकों की लड़ाई लड़ रहे हैं। एमएससी(भौतिक विज्ञान) में पढ़ते हुए क्रान्तिकारी पार्टी एसयूसीआई(सी) से जुड़े थे। पार्टी के संस्थापक महान क्रान्तिकारी नेता कॉमरेड शिवदास घोष के विचारों से दीक्षित होकर 1975-77 में कांग्रेस के इमरजेंसी शासन का डटकर विरोध किया था। बादली (झज्जर) व गुड़गाँव के 40 गाँवों की 25 हजार एकड़ भूमि पर रिलायन्स कम्पनी के एसईजैड (सेज) को रद्द करवाने और अब अधिग्रहित भूमि किसानों को वापस दिलाने के लिए संघर्षरत हैं। गोरखपुर (फतेहाबाद) में बन रहे महाविनाश के खतरे परमाणु केन्द्र के खिलाफ संघर्षों में भी रहे हैं। कॉमरेड जयकरण माण्डौठी ऑल इण्डिया कृषक खेत मजदूर संगठन के प्रदेश सचिव तथा मजदूर कल्याण मंच बहादुरगढ़ के प्रधान और शहीद मैमोरियल कमेटी बहादुरगढ़ के सचिव हैं।

हरिप्रकाश : सोनीपत

हरिप्रकाश एसयूसीआई (सी) हरियाणा राज्य कमेटी के सदस्य और एआईयूटीयूसी राज्य कमेटी के सचिव हैं। ये 1978 में पार्टी में शामिल हुए और निवार फैक्ट्री मजदूरों

(शेष पृष्ठ 5 पर)

23 मार्च –

(पृष्ठ 1 का शेष)

उत्तर प्रदेश

मुरादाबाद : शहीद-ए-आजम भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरु के शहादत दिवस पर मुरादाबाद के कम्पनी बाग, शहीद स्मारक, स्थल पर एआईडीवाईओ तथा एआईडीएसओ द्वारा संयुक्त रूप से एक विचार गोष्ठी की गई।

गोष्ठी को मुख्य वक्ता के रूप में एसयूसीआई(सी) के पोलित ब्यूरो सदस्य कॉ. रंजीत धर ने सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि आजादी आन्दोलन के सभी नायकों में शहीद ए आजम भगत सिंह महानायक थे। वे वैज्ञानिक समाजवाद के विचार के सबसे अधिक नजदीक थे। अपने समकक्ष सभी क्रान्तिकारियों में अधिक राजनैतिक रूप से परिपक्व थे। जलियाँवाला बाग की मिट्टी से जो सफर शुरू हुआ वह फाँसी के समय रूसी क्रान्ति के नायक महान लेनिन की किताब पढ़ने के साथ समाप्त हुआ। उन्होंने कहा कि समाज व व्यवस्था में परिवर्तन एक नियम से होता है। इस नियम को हमें जानना होगा तभी हम परिवर्तन ला सकते हैं। उन्होंने कहा कि केन्द्र व राज्यों में एक के बाद एक जो सरकारें आई वे भले ही भगत सिंह को शहीद का दर्जा न दें लेकिन इस देश की जनता के दिल में वे सबसे बड़े शहीद अर्थात शहीद-ए-आजम के रूप में मौजूद हैं। सरकारों द्वारा उन्हें भुलाने तथा शिक्षण सामग्री से उनका नाम हटाने की तमाम कोशिशें की गई लेकिन उनका नाम मिटाया नहीं जा सका। उन्होंने कहा कि आज का दिन महज एक औपचारिकता नहीं है बल्कि इस दिन हम भगत सिंह के सपनों का समाज बनाने का संकल्प लेते हैं।

सभा को सम्बोधित करते हुए मुख्य वक्ता कॉ. रंजीत धर

गोष्ठी को जाने माने गीतकार डॉ. माहेश्वर तिवारी, एआईडीएसओ की कॉ. ऋतु चौधरी, उपासना राजपूत, शिक्षाधिकारी बबीता सिंह, कमलेश चहल, एआईडीवाईओ के प्रदेश अध्यक्ष हरकिशोर सिंह ने भी सम्बोधित किया। शिशुपाल सिंह 'मधुकर' ने स्वरचित गीत सुनाया। लिपि सिंह, अंशिका सक्सैना, दिबीसा रस्तौगी के गाए गीत 'हम होंगे कामयाब'' के साथ गोष्ठी का समापन हुआ। गोष्ठी का संचालन मौ. गौरी ने किया।

आजादी आन्दोलन के महानायकों के चित्रों व कथनों की एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। इनमें सबसे सुन्दर थे मुरादाबाद के विख्यात चित्रकार डॉ. नरेन्द्र सिंह द्वारा बनाए गए भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरु के चित्र। टीएमयू की एमबीबीएस छात्रा नीरज भड़ाना के हत्यारों की गिरफ्तारी के लिए चलाए जा रहे आन्दोलन के क्रम में एक ''खुलापत्र'' जारी किया गया।

जौनपुर : 23 मार्च को देश के आजादी आन्दोलन की गैर-समझौतावादी धारा के महान क्रान्तिकारी शहीद-ए-आजम भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव के शहादत दिवस पर जौनपुर जिले में विभिन्न जगहों पर ऑल इण्डिया डी.एस.ओ. द्वारा कार्यक्रम आयोजित किए गए।

बहरा गाँव में एक आम सभा का आयोजन किया गया, जिसमें गाँव के लोगों ने शिरकत की। कार्यक्रम की अध्यक्षता राधे रमण शर्मा (पूर्व अध्यापक) व संचालन कॉमरेड इन्द्र कुमार शुक्ल ने किया। सभा को कॉ. दिनेश कान्त दूबे (सदस्य राज्य कमेटी एसयूसीआई(सी), उ. प्र.), कॉ. जयप्रकाश पाण्डेय, राजेन्द्र प्रसाद तिवारी, प्रमोद कुमार शुक्ल, रविशंकर मौर्य ने सम्बोधित किया। दिलीप कुमार, जितेन्द्र कुमार, रितिक, जिमी, सोनम, शिवांशी इत्यादि ने गीत प्रस्तुत किए।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

जनान्दोलन करते हुए, जनकमेटियों के निर्माण के जरिए जनता की राजनैतिक शक्ति को जन्म देते हुए जब राजसत्ता लोगों के हाथों में आएगी तब मुक्ति होगी

दिल्ली में कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती का भाषण

सभापति जी व उपस्थित साथियो,

सभी जानते हैं कि आजादी के संघर्ष में खुदीराम से शुरू कर नेताजी सुभाष बोस तक जो लोग शहीद हुए, उनके लिए जान कुर्बान करना कोई बड़ी बात नहीं थी। उन्होंने खुशी-खुशी जान कुर्बान कर दी। आपने सुना होगा कि मदन लाल ढींगरा को लन्दन में फांसी दी गई थी। मुकदमे के दौरान जज ने उनसे कहा कि आप एक होनहार नौजवान हैं, मैं आपकी जान नहीं लेना चाहता हूँ। आप यदि एक बार कह दें कि 'मुझे अपने किये पर अफसोस है, मैं क्षमा चाहता हूँ' तो कम से कम आप को मौत से मैं बचा दूँगा। मदन लाल ढींगरा ने कहा था : ''ह्वाई शैल आई? ह्वैन ए फोरेन कण्ट्री रूल्स अनदर विद आर्म्स, दैट इज ए डिकलेरेशन ऑफ वार अगैनस्ट दैट कण्ट्री।'' कोई दूसरा देश जब हमारे देश पर हथियारों के बल पर शासन कर रहा है तो इसका मतलब ही है कि उस देश ने हमारे देश के खिलाफ युद्ध की घोषणा की है। लेकिन ब्रिटिश सरकार ने हथियारों पर प्रतिबंध लगा रखा है। इसलिए मुझे छिपा कर एक पिस्तौल लेनी पड़ी। मुझे कोई अफसोस नहीं है। देश की आजादी के लिए ऐसे ही जान देनी होगी। भारत के नौजवानों को यह बताने के लिए मैं जान दे रहा हूँ कि जान कुर्बान किए बिना आजादी नहीं मिलती है। भगत सिंह भी इसी धारा में आए। भगतसिंह के जीवन के बारे में बहुत सारी बातें रखी जा चुकी हैं। मैं उनको दोहराने नहीं जा रहा हूँ। यह साफ हो जाना चाहिए कि सिर्फ हम ही नहीं बल्कि सभी लोग भगत सिंह को विशेष तौर पर क्यों मानते हैं। इसलिए कि भगतसिंह ने ही सबसे पहले यह समझा था कि सिर्फ ब्रिटिश शासकों को हटा देने से ही देश मुक्त नहीं होगा। गोरी चमड़ी वाले ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासकों की जगह यदि काली चमड़ी वाले देशी पूँजीपति शोषक-शासक सत्ता में आ जाएं तो राजनीतिक आजादी तो मिलेगी लेकिन शोषण-उत्पीड़न से जनता की मुक्ति नहीं होगी। इसीलिए उन्होंने दिखाया था कि आजादी की लड़ाई में जहाँ विदेशी साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष है वहीं इस देश के जो पूँजीपति हैं, जो शोषक हैं उनके खिलाफ भी संघर्ष होना चाहिए। कोई भी देश ऐसा नहीं है जहाँ सबका स्वार्थ एक हो। भारत में जहाँ टाटा, बिड़ला, गोयन्का, अम्बानी जैसे ज्यादा से ज्यादा 10% लोग देश के तमाम उत्पादन के साधनों पर कब्जा करके बैठे हैं वहीं लाखों करोड़ों मजदूर, खेतमजदूर अपनी श्रमशक्ति को बेचने के लिए मजबूर हैं। एक तरफ मालिक हैं जो तमाम उत्पादन के साधनों, फैक्ट्रियों, कल-कारखानों, बड़ी-बड़ी खदानों पर काबिज हैं, दूसरी तरफ मजदूर हैं जो अपनी मेहनत बेचते हैं। इन दोनों का स्वार्थ कभी भी एक नहीं हो सकता है। मालिक के लिए जो अच्छा है वह मजदूर के लिए बुरा है। सिर्फ इतना ही नहीं कि मालिक और मजदूर का स्वार्थ अलग है बल्कि इन दोनों का स्वार्थ एक दूसरे का विरोधी भी है। कोई भी व्यक्ति या पार्टी मालिक एवं मजदूर के हितों की रक्षा एक साथ नहीं कर सकती है। ये बुनियादी चीज आपको समझनी चाहिए जिसे भगत सिंह ने समझा था। मालिक का स्वार्थ मजदूर एवं शोषित जनता के हितों का विरोधी है। मालिक मजदूर की मेहनत खरीदता है। उत्पादन मजदूर करते हैं। धन-सम्पदा मजदूर पैदा करते हैं और मजदूर ही भूखों मरते हैं। मालिक की तिजोरियाँ भरती हैं। आज भारत में जो आप सुनते हैं कि विकास हुआ, विकास हुआ। हाँ विकास तो जरूर कुछ हुआ। लेकिन किसका विकास हुआ? हम कहते हैं कि हमारा देश पिछड़ा हुआ है। आप सुन कर हैरान हो जाएंगे कि दुनिया के 10 सबसे धनाढ्य लोगों में से पाँच भारतीय हैं। उनके पास यह पैसा कहाँ से आया? यह आया है मेहनतकश शोषित जनता का खून चूस कर। शोषक पूँजीपतियों के हित में ही तमाम नीतियाँ बनाई और लागू की जाती हैं। भूमण्डलीकरण की जो नीति आप देखते हो जिससे उदारीकरण-निजीकरण आया है, इसका नतीजा आप क्या देखते हो? शिक्षा का सारा क्षेत्र बड़े-बड़े पूँजीपतियों के हाथों में चला गया है। डॉक्टर बनने के लिए, इंजीनियर बनने के लिए लाखों रुपए खर्च करने पड़ते हैं। गरीब जनता के लिए शिक्षा रही नहीं। स्वास्थ्य सेवा पूरी तरह निजी हाथों में चली गई है। यहाँ तक कि जीवन की मूलभूत जरूरत, पानी को भी निजी हाथों में सौंपा जा रहा है। भारत में पानी की कोई कमी नहीं है। इतनी सारी नदियों का देश है। पानी बह कर समुद्र में चला जाता है। कुछ मुट्ठी भर पूँजीपतियों के मुनाफे के लिए नदियों के पानी को भी निजी हाथों में दिया जा रहा है। नागरिकों को पानी मुहैया कराना किसी भी सरकार की प्राथमिक जिम्मेदारी होती है लेकिन वह भी आपको खरीद कर पीना पड़ेगा।

पूँजीवाद आज महा संकट में फंसा हुआ है। पूँजीवादी शोषण की वजह से आम जनता की खरीद शक्ति घटते-घटते ऐसी स्थिति पैदा हो गई है कि दुनिया भर में पूँजीपतियों के लिए बाजार का संकट खड़ा हो गया है। बाजार क्या होता है? बाजार होता है जनता की खरीदने की क्षमता। यदि खरीदने की क्षमता घट जाये तो बाजार कहाँ रहेगा और यदि बाजार नहीं रहे तो उत्पादन ठप हो जाता है। क्योंकि पूँजीवाद में उत्पादन होता है मुनाफे के लिए। यदि उत्पादित माल बाजार में न बिके तो और उत्पादन क्यों करेगा? उत्पादन घट जाता है। मजदूरों की छंटनी होती है। नौकरीशुदा लोगों की नौकरी चली जाती है। यही सब हो रहा है। 'विकास'-'विकास' करके मोदी भी चिल्ला रहे हैं, राहुल भी चिल्ला रहे हैं लेकिन यह नहीं बता रहे कि विकास किसके लिए? सीधा सवाल पूछना चाहिए कि साफ-साफ बताओ किसके विकास की बात कर रहे हो –पूँजीपतियों के विकास की या आम जनता के विकास की। कोई नहीं बताएगा। सीधे-सीधे बताओ कि आप भूमण्डलीकरण के हक में हो या विरोध में? वे नहीं बताएंगे। आप जितने भाषण सुनोगे उनमें जनता का कोई मुद्दा नहीं होता है। कांग्रेस बोलेगी बीजेपी के खिलाफ, बीजेपी बोलेगी कांग्रेस के खिलाफ लेकिन जनता की समस्याओं पर कोई नहीं बोलता है। आज चुनावों में यही सब हो रहा है।

भगतसिंह ने ऐसा नहीं चाहा था। भगतसिंह ने चाहा था यदि मुक्ति हो तो शोषित जनता की मुक्ति हो। विदेशी शासक-शोषक इस देश से जाएं तो शासन की बागडोर इस देश की शोषित जनता के हाथ में आए, जैसा सोवियत यूनियन में हुआ था, जहाँ लेनिन ने मजदूर राज कायम किया था जिसे स्टालिन ने विकसित किया था। इस देश में भी ऐसा ही होना चाहिए। भगतसिंह की विशेषता यहाँ थी। फांसी पर चढ़ाने के लिए जब उनको पुकारा गया तब वे लेनिन की किताब 'एक कदम आगे दो कदम पीछे' पढ़ रहे थे। उन्होंने चाहा था शोषित जनता खासकर मजदूरों

(शेष पृष्ठ 4 पर)

मोदी के राज्य में मौज ले रहे हैं कारखानेदार किसान–मजदूरों और बेरोजगारों का हाहाकार

बीजेपी के प्रधान मंत्री पद के उम्मीदवार नरेन्द्र मोदी 'सुशासन' देने का वायदा कर रहे हैं। लेकिन उनके खुद के राज्य गुजरात में उन्होंने कैसा सुशासन दिया? 2011-12 में सिर्फ एक साल में वहाँ बेरोजगारों की संख्या बढ़कर 97 हजार हो गई हैं यानी लगभग एक लाख। यह तो केवल पंजीकृत बेरोजगारों की संख्या है, अगर अपंजीकृत बेरोजगारों की संख्या भी इसमें जोड़ दी जाए तो यह संख्या और भी कई गुना बढ़ जाएगी। इस साल के नेशनल सैम्पल सर्वे ऑर्गेनाइजेशन की रिपोर्ट के मुताबिक गुजरात के ठेका मजदूरों की हालत बहुत खराब है। शहर-देहात की दैनिक दिहाड़ी मजदूरी राष्ट्रीय औसत रेट 170 रुपए है, वहीं गुजरात में प्रति मजदूर को मिल रहे हैं सिर्फ 113रु। हालाँकि राष्ट्रीय औसत मजदूरी से भी मजदूर अपने परिवार का गुजर-बसर नहीं कर सकता है। 2010-11 के इकोनोमिक सर्वे में दिखाया गया है कि पूरे देश में गुजरात में ही सबसे ज्यादा हड़ताल और विभिन्न तरह के श्रमिक असंतोष, विक्षोभ प्रदर्शन हुए हैं। मोदी अगर मजदूर-हितैषी होते तो मजदूर हड़ताल पर क्यों जाते? वे शौक के लिए तो ऐसा करते नहीं। प्रचार किया जा रहा है कि मोदी ने गुजरात में पूँजीनिवेश की बाढ़ ला दी है। यह प्रचार बिल्कुल झूठा और भ्रामक है। वहाँ पहले से ही विभिन्न उद्योग लगे हुए थे। रोजकोट में मशीनों के कल-पुर्जे, डीजल इंजन बनाने का कारखाना या सूरत, भावनगर में हीरों को तराशने का उद्योग पहले से था। मोदी ने औद्योगिकीकरण कहाँ किया?

भ्रष्टाचार के खिलाफ जेहाद छेड़ने का ऐलान करने वाले मोदी के अपने शासनकाल में ही गुजरात में भ्रष्टाचार का पूरा बोलबाला है। राज्य के प्रभावशाली मंत्री-नेता भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। कांग्रेस या अन्य पार्टियों के भ्रष्टाचार के खिलाफ गला फाड़ कर चिल्लाने पर भी बीजेपी के भ्रष्ट नेता-मंत्रियों के बारे में मोदी चुप्पी साधे हुए हैं। सिर्फ इतना ही नहीं, बल्कि ये मोदी के बेहद करीबी लोग हैं मोदी सरकार के वाटर रिसोर्स एण्ड एग्रीकल्चरल मिनिस्टर 54 करोड़ रूपये के अवैध चूना पत्थर खनन घोटाले में अभियुक्त ठहराए जाने पर तीन साल की सजा काट रहे हैं। पूर्व मोदी सरकार के मंत्री पुरुषोत्तम सौलंकी ने राज्य में मछली मंत्री रहते समय 58 फिशिंग रिजरवायरों के टैण्डरों के एक समझौते पर दस्तखत किए थे जिनमें करोड़ों रुपये का घपला हुआ था। यह खबर छपी थी। 2013 में इन्हीं सौलंकी को मुम्बई दंगों के लिए श्रीकृष्ण आयोग द्वारा अभियुक्त बनाया गया था। मोदी के अत्यन्त चहेते पूर्व गृहमंत्री अमित शाह सहित 32 बीजेपी विधायकों के खिलाफ फौजदारी मुकदमें चल रहे हैं। इनमें इस दौरान 6 मामलों में दोषी ठहराया जा चुका है। कुछ दिनों पहले ही कर्नाटक में बीजेपी के मुख्यमंत्री थे येदुरप्पा जिन्होंने खनन घोटाले में दोषी ठहराये जाने पर जेल काटी हुई है। वे अब फिर मोदी की बगल वाले आसन पर बाकायदा तशरीफ रखते हैं।

मोदी के राज्य में पेयजल और सिंचाई के पानी की घोर किल्लत है। मोदी सारे राज्य में पीने का पानी पहुँचा देने के लिए नर्मदा परियोजना का राग अलापते रहते हैं। लेकिन राज्य में पीने के पानी और सिंचाई का क्या हाल है? कुछ एक महीने पहले ही गुजरात के बहुत बड़े इलाके में भयंकर सूखा पड़ा था। पश्चिम सौराष्ट्र और कच्छ का इलाका बिन पानी सब सून हो गया था। एक एक बाल्टी पानी के लिए भी यहाँ के लोगों में हाहाकार मच गया था। छोटे-बड़े सभी जलाशय सूख जाने से भयंकर जल संकट पैदा हो गया था। गाँवों की महिलाओं को एक बाल्टी पानी जुटाने के लिए 2-3 किलामीटर दूर तक पैदल जाना पड़ता था। इस समय 10 दिन में सिर्फ एक बार पानी सप्लाई किया जाता था। राजकोट जिले के जैतपुर शहर में, अमरोली में महीने में सिर्फ दो बार पानी दिया जाता था। पानी की मांग को लेकर इस इलाके के लोगों का रोष फूट पड़ा था। पीने के पानी की मांग पर वहाँ मुकम्मल बन्द हुआ था। खेती की जमीन के लिए सिंचाई व्यवस्था में गुजरात का स्थान देश में 13वें नम्बर पर है।

गुजरात में कृषि में पिछड़ापन है जबकि उद्योगपतियों को सुविधाएं देने में बड़ी तत्परता दिखाई जा रही है। 'स्टेट ऑफ इण्डियन एग्रीकलचर' की 2007 से 2012 की 11वीं पंचवर्षीय योजना के मुताबिक गुजरात स्टेट डोमेस्टिक प्रोडक्ट (डीएसडीपी) गिर कर आधे पर पहुँच गई है। इस साल यह 4.5% है। हैदराबाद के 'इन्स्टीट्यूट ऑफ रिसोर्स एनालिसिस एण्ड पोलिसी' 2010 की 'गुजरात एग्रीकलचरल ग्रोथ स्टोरी: एक्सप्लोडिंग सम मिथस' में छपा है कि नए आर्थिक वर्ष में गुजरात की हाई ग्रोथ की व्याख्या बिल्कुल बनावटी है। सन 2001-2009 की असली ग्रोथ थी 4% जो 9.6% दिखाई गई थी। मौजूदा दौर में दो-दो बार कृषि उत्पादन खतरनाक रूप से गिरा है। सन 2010 में यह गिर कर 123 किलोग्राम पर पहुँच गया था। पूरे राज्य को 'स्पेशल इकोनोमिक जोन' (एसईजैड) बना दिया गया है। जिसमें सरकार की ओर से उद्योगपतियों को टैक्सों में भारी छूट, औने-पौने दामों पर जमीन, मुफ्त बिजली-पानी, सस्ती मजदूरी पर काम करने वाले मजदूर दिए गए हैं। एसईजैड नीति को अपनाकर 53% कृषि पर निर्भर इस राज्य में बहुत सारी जमीन प्राईवेट कम्पनियों के हाथों में दे दी गई है। बिजली-पानी के अलावा जमीन में भी कॉरपोरेट घरानों को काफी रियायत दी गई है। विशेष-निवेश क्षेत्र बनाकर उन्हें देश में मॉडल के तौर पर देशी-विदेशी सरमाएदारों के सामने पेश करने के लिए धोलेरा इलाके के 12 गाँवों की 920 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र की कृषि भूमि से 15 हजार किसान परिवारों को मोदी सरकार बेदखल करने जा रही है। इसमें ज्यादातर जमीन अत्यंत उपजाऊ है। निर्यात योग्य उत्तम क्वालिटी के गेहूँ उत्पादन के लिए यह इलाका मशहूर है।

किसानों की आत्महत्या के मामले में गुजरात है देश में नम्बर एक

मोदी के शासनकाल में गुजरात में 9829 मजदूरों, 5457 किसानों और 917 खेतमजदूरों ने आत्महत्या की है। प्रति व्यक्ति कर्ज में गुजरात है देश में नम्बर वन। 31 मार्च 2011 के हिसाब से गुजरात में कुल कर्ज 1 लाख 24 हजार 580 करोड़ रुपए है यानी अब प्रति व्यक्ति कर्ज 24 हजार 704 रुपए है। राज्य की स्वास्थ्य सेवा निजीकरण की चपेट में है, गुजरात में शिशु मृत्युदर अत्यन्त अधिक है। यहाँ नवजात बच्चों और पाँच साल से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर अत्यन्त अधिक है। राष्ट्रीय औसत दर को पीछे छोड़ दिया है। महिलाओं और पुरुषों में औसत उम्र प्रतिषेधक और जन्म के बाद शिशुओं की चिकित्सा के क्षेत्र में गुजरात राष्ट्रीय पैमाने के आसपास भी नहीं पहुँच पाता है। सर्वे में दिखाया गया है कि गुजरात के पुरुषों की औसत उम्र केरल के आम लोगों की औसम उम्र से साढ़े सात साल से भी कम है और पंजाब वालों से ढाई साल कम है। राष्ट्रीय परिवार संस्था के सर्वे के आँकड़ों के मुताबिक पाँच साल से कम उम्र के हर दो बच्चों में से एक का, हर तीन महिलाओं में से एक का और हर दो किशोरियों में से एक का वजन स्वाभाविक रूप से कम है। इण्टरनेशनल फूड पोलिसी रिसर्च इन्सटीट्यूट की रिपोर्ट कहती है कि गुजरात में 50% बच्चों का ही वजन स्वाभाविक रूप से जितना होना चाहिए उससे कम है। 50% महिलाएं खून की कमी की शिकार हैं।

बुनियादी शिक्षा में भी गुजरात उल्लेखनीय रूप से फिसड्डी है। यूनिसेफ की सर्वे रिपोर्ट कहती है कि जो पाठ्यपुस्तकें पढ़ सकते हैं, शुरूआती जोड़-घटा के सवाल निकाल सकते हैं, समय बता सकते हैं, पैसे गिन सकते हैं ऐसे छात्रों का प्रतिशत गुजरात में बिहार से भी कम है।

शिक्षा स्वास्थ्य का जहाँ इतना बुरा हाल है, जहाँ आर्थिक संकट में गरीब-मध्यम वर्गीय परिवारों के लोगों का दम फूल उठा है, जिनके शासनकाल में किसान-मजदूर, बेरोजगार युवक हाहाकार कर रहे हैं वहीं कारपोरेट पूँजी द्वारा नियंत्रित मीडिया मोदी की तारीफों के पुल बांधे जा रहा है। मकसद साफ जाहिर है। मोदी को प्रधानमंत्री बना कर सरमायेदार अपना स्वार्थ साधना चाहते हैं। उन्हें लग रहा है कि पिछले 10 साल के कांग्रेस-नीत यूपीए सरकार के कुशासन, भ्रष्टाचार और पूँजीपरस्त नीतियों से बढ़ी महंगाई, बेरोजगारी, गरीबी से लोगों का जीना दूभर हो जाने से कांग्रेस से लोग अब आजिज आ चुके हैं। इसलिए उसकी जगह सरमायेदार अब बीजेपी को सत्ता में लाना चाहते हैं। कांग्रेस और बीजेपी दोनों ही सरमायेदारों की भरोसेमन्द पार्टियाँ है। सरमायेदार चुनावों में उनके प्रचार के लिए करोड़ों रुपये पानी की तरह बहा रहे हैं। मीडिया उनकी छवि बनाने के लिए दिन रात इनके ढोल पीटने में लगा हुआ है। भारत में पिछले 18 साल में 3 लाख किसान आत्महत्या कर चुके हैं। हर 20 मिनट में एक महिला से बलात्कार होता है। इनमें से 40% महिलाएं 18 साल से कम उम्र की युवतियाँ हैं। शिक्षा-स्वास्थ्य आम लोगों से छीना जा रहा है। किसानों को उनकी उपजाऊ जमीनों से बेदखल किया जा रहा है। हर तीन ग्रेज्यूएट युवकों में से एक बेरोजगार है। ज्यादातर नौकरियों में ठेकेदारी प्रथा है। कुल रोजगार प्राप्त श्रम शक्ति का 68% कैजुअल मजदूर हैं जिनसे कम वेतन पर काम लिया जाता है और जिन्हें कोई सामाजिक सुरक्षा का सहारा नहीं है। उच्च मुद्रास्फीति दर में भारत दुनिया के टाप 15% देशों में आता है। खाद्य पदार्थों की महंगाई पिछले 5 साल से 12% सालाना है। नतीजतन आवश्यक वस्तुओं के दाम आसमान छू रहे हैं। ये महज आँकड़ें नहीं हैं। यह इस देश की कठोर वास्तविकता का आईना है। फिर भी ये दोनों पार्टियाँ 'विकास' के झूठे दावों से लोगों को बहकाने में लगी हुई हैं जबकि लोगों की जिन्दगी का कड़ुवा तजुर्बा यह है कि केन्द्र व राज्यें सरकारों की जिन जनविरोधी नीतियों की वजह से बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, महिलाओं पर बढ़ते अत्याचार, गरीबी, भुखमरी और कर्जजाल से उनका जीना दूभर हो गया है, उन नीतियों के मामले में कांग्रेस और बीजेपी में कोई फर्क नहीं है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विचार गोष्ठी आयोजित

सागर (म.प्र.) : अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 8 मार्च को तहसील परिसर सागर में ऑल इंडिया महिला सांस्कृतिक संगठन सागर इकाई द्वारा एक विचार गोष्ठी की गई। ए.आई.एम.एस.एस. की राज्य संयोजक रचना अग्रवाल ने वर्तमान समाज में महिला भ्रूण-हत्या, दहेज हत्या व आत्महत्या, यौन शोषण व उत्पीड़न, दुष्कर्म व सामूहिक दुष्कर्म जैसी इंसानियत को शर्मसार करने वाली घटनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि महिलाओं को आजादी के 66 वर्ष गुजर जाने के बावजूद आज भी जनतांत्रिक मूल्यबोध यानी पुरुष-स्त्री समानता का हक हासिल नहीं हुआ है उसे कमजोर समझा जाता है तथा सम्मान की नजर से नहीं देखा जाता। टी.वी., फिल्मों, इलेक्ट्रॉनिक व प्रिंट मीडिया, सौंदर्य प्रतियोगिताओं तथा विज्ञापनों में ''माल'' की तरह प्रस्तुत किया जा रहा है जिससे समाज का अधिकांश हिस्सा महिलाओं को उपभोग की वस्तु से अधिक नहीं मान रहा है। फलत: पाश्विक घटनाएं दिनों दिन बढ़ती जा रही हैं। भोपाल जिला प्रभारी जॉली सरकार, जिज्ञासा मिश्रा ने भी अपनी बात रखी। अंत में सोना कुशवाहा ने गीत प्रस्तुत किये। संचालन पूजा चौरसिया ने किया। गोष्ठी में गुना जिला अध्यक्ष संगीता आर.बी., सरिता पटैल, भारती अहिरवार, मंजू पटैल, मनीषा गौंड़, सपना व मंजू अहिरवार सहित अनेक छात्राएं तथा महिलायें मौजूद थी।

23 मार्च – कॉ. चक्रवर्ती का भाषण..

(पृष्ठ 2 का शेष)

के हाथ में राजसत्ता आए। दूसरी बात जिस पर आपको गौर करना चाहिए वह है उनका यह चिन्तन कि पार्टी चाहिए। मजदूर का राज कायम करने के लिए मजदूर की अपनी पार्टी होनी चाहिए। लेनिन ने बताया था कि ''जैसे एक क्रान्तिकारी सिद्धान्त के बिना क्रान्ति नहीं होगी ऐसे ही एक क्रान्तिकारी पार्टी के बिना भी क्रान्ति नहीं होगी।'' और वह होती है कम्युनिस्ट पार्टी जिसे लेनिन ने बनाया था। हमारे देश में सीपीआई, सीपीआई(एम), सीपीआई(एमएल) में से कोई कम्युनिस्ट पार्टी नहीं है। यह बात आज बिल्कुल साफ हो गई है। बहुत पहले ही इन्होंने आन्दोलन का रास्ता छोड़ दिया है। आज ये येन-केन प्रकारेण सत्ता में जाने की जुगत भिड़ा रही हैं। इसके लिए क्षेत्रीय बुर्जुआ पार्टियों के साथ गठजोड़ कायम कर रही हैं। जनान्दोलन करते हुए, संघर्ष करते हुए, जनकमेटियों-जनसंगठनों का निर्माण करने के जरिए जनता की राजनैतिक शक्ति को जन्म देते हुए जब राजसत्ता लोगों के हाथों में आएगी तब मुक्ति होगी। यह है भगत सिंह का चिन्तन। ये दोनों विषय एक दूसरे के साथ ओत-प्रोत रूप से जुड़े हुए हैं –इसे आपको समझना चाहिए। हम मुक्ति चाहते हैं। मुक्ति दिलाएगा कौन? आपका अपना संगठन मुक्ति दिलाएगा। अपने संगठन को मजबूत करो। सही क्रान्तिकारी पार्टी जो इस देश में एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) है उसे मजबूत करो।

कांग्रेस को वोट दे कर भी आपने देख लिया क्या हुआ? बीजेपी को भी वोट देकर देख लिया लेकिन उससे कुछ बेहतर नहीं हुआ। वाजपेयी सरकार भी सत्तासीन हुई थी। कांग्रेस सरकार भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण की ये नीतियाँ लाई। जब वाजपेयी सरकार आई तो उसने भी इन्हीं नीतियों को आगे बढ़ाया। इनकी नीतियों में कोई फर्क नहीं। मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ या गुजरात में जाइए नीतियों में कोई फर्क नहीं मिलेगा। कांग्रेसी शासन हो, बीजेपी शासन हो कोई फर्क नहीं है। यहाँ तक कि पश्चिम बंगाल, केरल, त्रिपुरा में जो सीपीआई(एम) का शासन था वह भी कोई अलग तरह का नहीं था। सभी ने पूँजीपति-परस्त, जनविरोधी नीतियों को ही हमेशा लागू किया। जन आन्दोलनों को पुलिस बल से दबाया। यदि आपके पास कोई पार्टी वोट मांगने आए तो पहला सवाल होना चाहिए आप किसके लिए लड़ रहे हो। क्या आम जनता के लिए? तो बताइये जो लाखों लाख शिक्षित युवक, यहाँ तक कि इंजीनियरिंग पास किये हुए जो 3.5 लाख इंजीनियरिंग स्नातक बेरोजगार हैं, एमबीबीएस करके जो नौजवान नौकरी के लिए दर-दर भटक रहे हैं क्या आप उनको रोजगार देंगे? आप बेरोजगारी कैसे दूर करोगे? मंहगाई और भ्रष्टाचार पर कैसे रोक लगाओगे? क्या पूँजीवादी शोषण-शासन में यह संभव है? आम लोग कहते हैं कि आजादी के 67 सालों में अमीर और भी अमीर हुआ है। गरीब और भी गरीब होता चला गया। हालत यहाँ पहुँच गई है कि एक तरफ 500-600 लोग हैं जो अरबपति हैं और दूसरी तरफ 70% लोग ऐसे हैं जिनकी क्षमता 20 रुपये रोजाना खर्च करने की भी नहीं है। ऐसा क्यों हुआ? किस वजह से हुआ? पूँजीवादी शोषण के चलते ही ये हालात पैदा हुए हैं।

कांग्रेस हो या बीजेपी, पूँजीपतियों की सबसे भरोसेमंद ये पार्टियाँ पूँजीपतियों के शासन की सेवा और सुरक्षा में रत हैं। पूँजीपतियों की सेवा करते हुए जन-विरोधी नीतियाँ अपनाते-अपनाते जब कांग्रेस बदनाम हो जाती है तो बीजेपी जैसी अपनी ही एक और पार्टी को सामने लाते हैं कि इसको वोट दो। फिर बीजेपी जब बदनाम हो जाती है तो दुबारा कांग्रेस को सामने ले आते हैं कि इसको वोट दो। दोनों ही पार्टियाँ पूँजीपतियों की हैं–यह बात आपको समझनी चाहिए। दोनों से जनता की कोई भलाई नहीं होगी, यह इसलिए नहीं कि हम कह रहे हैं बल्कि अपने जिंदगी के तजुर्बे से आप खुद समझ जाएंगे कि ये दोनों ही पूँजीपति वर्ग की पार्टियां हैं। कोई भी पार्टी या तो पूँजीपतियों की सेवा करेगी या जनता की। एक ही साथ दोनों की सेवा करना संभव नहीं है। दोनों के स्वार्थ विपरीत हैं। तो आप बताओ किसके हित में हो, किसके लिए तुम लड़ रहे हो, कौन सी नीति तुम अपनाओगे? यह हुई एक बात।

दूसरी बात है यदि जनता अपनी पार्टी को नहीं पहचानती है, उसमें शामिल नहीं होती है और उसे मजबूत नहीं करती है तो जनता के हाथ में कुछ नहीं रहता है। चुनाव में सिर्फ वोट देने का अधिकार है और कोई क्षमता नहीं है। चुनाव के वक्त हाथ जोड़ कर आते हैं कि वोट दो, ऐसा दिखाते हैं मानो आप कितने बड़े हैं लेकिन चुनाव के बाद लोगों की उन्हें कोई परवाह नहीं। संगठन हो तो ऐसा नहीं हो सकता। यदि जनता अपने संगठन में संगठित हो जाए तो ऐसा नहीं होगा। भगत सिंह ने यही चाहा था। इसलिए उन्होंने 1928 में हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी (एचएसआरए) संगठन बनाया था। चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह ने जनता की क्रान्तिकारी पार्टी बनाने का प्रयास किया था। पार्टी के बिना काम चलेगा नहीं यह भगत सिंह का एक महत्वपूर्ण चिन्तन था। जनता को इसे समझना चाहिए।

एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि भगत सिंह नास्तिक थे। वे मानते थे कि धर्म एक व्यक्ति का व्यक्तिगत मामला है और नास्तिक ही सही मायने में धर्मनिरपेक्ष हो सकता है। जिसका मानना है कि धर्म का सवाल व्यक्तिगत आस्था और विश्वास का मामला है, इसे राजनीति में नहीं लाना चाहिए। एक धर्मनिरपेक्ष जनवादी देश में विश्वास रखने वाले और विश्वास नहीं रखने वाले दोनों को ही कानून की नजरों में समान समझा जाता है। भगत सिंह का यह धर्मनिरपेक्ष जनवादी चिन्तन हमारे देश में रहा नहीं। एक धर्म निरपेक्ष राज्य न तो धर्म को प्रोत्साहन देता है और न ही धार्मिक मामलों में दखल देता है। यह धर्म को व्यक्तिगत आस्था और विश्वास का मामला मानता है। लेकिन हमारे देश में क्या चल रहा है? यहाँ राजसत्ता द्वारा सभी धर्मों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। यदि ऐसा किया जाए तो स्वाभाविक है कि बहुसंख्यक धार्मिक सम्प्रदाय अल्पसंख्यक संप्रदाय पर हावी रहेगा। जब कोई स्टेट सभी धर्मों को प्रोत्साहन देती है तो उसे मल्टी थियोक्रेटिक स्टेट यानी बहुधर्मीय राज्य कहा जाता है। वह धर्मनिरपेक्ष राज्य नहीं होता है। पाकिस्तान इस्लाम को बढ़ावा देता है तो उसे हम इस्लामिक थियोक्रेटिक स्टेट कहते हैं। आप सभी धर्मों को बढ़ावा दे रहे हैं तो यहां हुआ मल्टी थियोक्रेटिक स्टेट। इसमें धर्मनिरपेक्षता कहाँ है? ये कांग्रेस और बीजेपी धर्मनिरपेक्षता को लेकर हल्ला मचा रही हैं लेकिन कोई भी धर्मनिरपेक्षता को नहीं मानता है। धर्मनिरपेक्षता तो दूर की बात दंगे चाहे हिन्दू-मुसलमान के बीच हों या हिन्दू-सिख के बीच, ये दंगे कौन कराते हैं? यह भी आपको समझना होगा।

पूँजीवाद आज भयंकर संकट में है। भारत का पूँजीवाद ही नहीं बल्कि तमाम दुनिया का पूँजीवाद आज महा संकट में है। 2008 में जो मंदी आई वह 1930 में आई मंदी से भी भयंकर है जिसके चलते दूसरा विश्वयुद्ध हुआ था। इस मंदी का प्रभाव अभी भी जारी है। इसके चलते जीवन भयंकर रूप से असहनीय और दमघोटू हो गया है। आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक समस्याएं घनघोर हो उठी हैं। क्या ही भयानक स्थिति है! पिछले दिनों दिल्ली में जो 'निर्भया' काण्ड हुआ ऐसी सामूहिक बलात्कार की घटनाएं निरन्तर हो रही हैं। कोई भी महिला हमारे देश में सुरक्षित नहीं है। भ्रष्टाचार सारे देश में छा गया है। इस भयंकर परिस्थिति के खिलाफ जो लड़ाई होनी चाहिए उसे कौन करेगा? ऐसे एक संकट के समय जब जनता में आन्दोलन की चाह पैदा होती है तो जनता में फूट डाल दी जाती है। हिन्दू-मुसलमान, हिन्दू-सिख, बंगाली-बिहारी, गुजराती-मराठी का झगड़ा करा दिया जाता है। मुम्बई में बिहार और यूपी के जो लोग काम करने के लिए जाते हैं, महाराष्ट्र में धरती पुत्र का नारा उठाया जाता है, और कहा जाता है कि उन सबको मारो, पीटो, भगाओ। आसाम में बंगाली, बिहारियों को मार भगाओ। ये सब कौन कराता है? किसके हित में ये सब किया जाता है? यह सब पूँजीपतियों की सेवादार पार्टियों और ताकतों द्वारा जनता में फूट डालने के लिए किया जाता है। आंन्ध्र प्रदेश में एक ही भाषा-भाषी लोगों को तेलांगना और सीमा-आंध्रा में बांट कर झगड़ा करवा दिया। यह सब क्षेत्रीयतावाद, आँचलिकतावाद, जात-पांत, ऊँची जाति, नीची जाति, साम्प्रदायिकता का जहर कौन घोलता है? मजदूरों को कहना चाहिए कि पहले हम मजदूर हैं, बाद में हिन्दू या मुसलमान हैं। मजदूर होना ही प्रधान बात है। मालिक जब मजदूर का शोषण करते हैं तो हिन्दू या मुसलमान देख कर नहीं करते हैं। बिड़ला एक महा हिन्दू है, कितने मन्दिर बनवाए हैं लेकिन बिड़ला के कारखाने में जो हिन्दू मजदूर हैं क्या उनको कहा जाता है कि आप हिन्दू हैं इसलिए हम आपका शोषण नहीं करेंगे? मुसलमान का वे जितना शोषण करते हैं हिन्दू का उससे कम नहीं करते। लेकिन हिन्दू-मुसलमान का झगड़ा कराते हैं। वे हममें फूट डालते हैं, ये उनका काम है। इसे हमें समझना चाहिए। जैसे बात आई कि मुसलमान अल्पसंख्यक हैं। यदि मुसलमान अपने को सिर्फ मुसलमान समझें तो हाँ वे अल्पसंख्यक हैं। लेकिन यदि मुसलमान समझें कि हम मजदूर हैं तो वे बहुसंख्यक हैं। समाज में लोगों की व्यापक बहुसंख्या ही तो मजदूर है। यदि कोई सोचे कि हम नीची जाति के हैं तो वे अल्पसंख्यक हैं और यदि वे सोचे कि हम मजदूर हैं, शोषित हैं तो वे बहुसंख्यक हैं। तमाम शोषित जनता हिन्दू हो, मुसलमान हो, ऊँची जाति हो, नीची जाति हो, बंगाली हो, बिहारी हो, मराठी हो, गुजराती हो, जो भी हो, मजदूर यदि एकजुट हो जाएं तो पूँजीपति सिर्फ डरेगा ही नहीं, बल्कि उसके शासन का खात्मा हो जाएगा। उसे हम उखाड़ फेंकेंगे और मजदूर का राज कायम कर देंगे। इसलिए जैसे भी हो जनता में फूट डाल कर बांट देने के लिए ही ये सब साजिशें रची जा रही हैं। भगत सिंह के चिन्तन का ठीक विरोधी चिन्तन फैलाया जा रहा है। भगत सिंह ने चाहा था कि तमाम देश की शोषित जनता एकजुट हो कर न सिर्फ विदेशी साम्राज्यवादियों को बाहर खदेड़ दे बल्कि इस देश का जो शोषक पूँजीपति वर्ग है उसको भी अलग-थलग करके सत्ता अपने हाथ में ले ले। यहीं पर है भगत सिंह के चिन्तन और राजनीति की विशेषता। जब हम भगतसिंह को श्रद्धांजलि देने के लिए आए हैं तो इस मूल बात को हमें समझना चाहिए। मार्क्स, लेनिन के प्रति उनका आकर्षण सिर्फ व्यक्ति के रूप मे नहीं था बल्कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद को उन्होंने मुक्ति के रास्ते और आदर्श के रूप में देखा था। हमें समझना चाहिए कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बिना मजदूर एवं शोषित जनता की मुक्ति कहीं भी नहीं हुई और न ही होनी संभव है। सीपीआई, सीपीआई(एम), सीपीआई(एमएल) ने मार्क्सवाद के नाम पर गलत बातें सिखाई। वह मार्क्सवाद नहीं है।

महान मार्क्सवादी दार्शनिक, हमारी पार्टी एसयूसीआई(सी) के संस्थापक हमारे शिक्षक, पथ-प्रदर्शक कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया कि मार्क्सवाद क्या होता है, मार्क्सवाद क्या चरित्र देता है, क्या संस्कृति लाता है, क्या चिन्तन लाता है। उन्होंने ही भगत सिंह के संघर्ष को आगे बढ़ाते हुए मार्क्सवाद-लेनिनवाद के आधार पर एक सही कम्युनिस्ट पार्टी सोशलिस्ट यूनिटी सेण्टर आफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) बनाई और भारत के सर्वहारा एवं शोषित जनता को पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति का रास्ता दिखाया। आज इस पार्टी को मजबूत करना ही मुक्ति का एकमात्र रास्ता है। इसके बिना मुक्ति नहीं होगी।

आम आदमी पार्टी की बात आई है। आम आदमी पार्टी तो कम्युनिस्ट पार्टी नहीं है। यह तो केजरीवाल जी ने खुद ही कहा कि हम पूँजीपतियों के पक्ष में हैं, उनके विरोध में नहीं हैं। लेकिन जिस प्रकार तमाम कॉरपोरेट घराने मोदी को सामने ला रहे हैं, जिस प्रकार आरएसएस देश में एक हिन्दू धर्मान्धता, कट्टरता पैदा करके भयंकर फासीवादी परिवेश तैयार कर रहा है, उसके विरोध में आम आदमी पार्टी एक भूमिका निभा रही है –यह तो मानना ही पड़ेगा। यदि हम समझें कि वह हमें मुक्ति दिला देगी तो वह गलत होगा। लेकिन वर्तमान स्थिति में जहाँ एक भयंकर फासीवादी रुझान उभर कर आ रहा है उसमें कम से कम एक बाधा के रूप में वह काम करेंगी–इसको तो हमें स्वीकार करना ही चाहिए। लेकिन पूँजीवाद-विरोधी सही चिन्तन के बिना, एक महान संस्कृति के बिना, संगठन के बिना, आन्दोलन के बिना क्रान्ति नहीं होगी जो सिर्फ एसयूसीआई(सी) ही कर सकती है और कोई नहीं। यह सिर्फ चुनाव का ही सवाल नहीं है। जन आन्दोलन संगठित और तेज करते हुए जनता का अपना संघर्ष का हथियार जन संघर्ष कमेटियाँ बनाते हुए जनशक्ति को तैयार कर देना है जो आखिर तक एक दिन हथियार उठा कर इस पूँजीवाद को खत्म कर देगी। यदि हम यह कर सके तो भगत सिंह का रास्ता हमने अपनाया, हम क्रान्ति करेंगे और करने के लिए ही हम आए हैं। मैं तमाम नौजवानों को यही कहूँगा कि यही है एकमात्र सही रास्ता। भगत सिंह को सम्मान देने का मतलब भी यही है। इस आन्दोलन को आप तेज करेंगे इसी भरोसे के साथ मैं अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ।

इंकलाब-जिन्दाबाद!
मजदूर क्रान्ति जिन्दाबाद!

आगामी लोकसभा चुनाव में एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) पार्टी के उम्मीदवारों को विजयी बनाएं

(पृष्ठ 1 का शेष)

को संगठित करना शुरू किया। तब से ये कार्य में जुटे रहे और अंततः हरियाणा राज्य में मजदूर आन्दोलन के अगुआ संगठक बन गए।

बिहार

अशोक कुमार सिंह : मुजफ्फरपुर

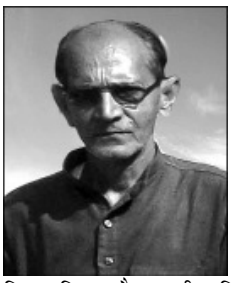

अशोक कुमार सिंह एसयूसीआई(सी) बिहार राज्य कमेटी के सदस्य और एआईकेकेएमएस बिहार राज्य कमेटी के सचिव हैं। पार्टी द्वारा मुजफ्फरपुर में विभिन्न समय किए गए तमाम आन्दोलनों में इनहोंने हिस्सा लिया और अपनी भूमिका निभाई है। 1978 में इन्होंने दरभंगा में पार्टी यूनिट का गठन किया। मुजफ्फरपुर जिले में सघन आबादी वाले क्षेत्र मारवान ब्लाक के नजदीक कैंसरजनक एसबेस्टस फैक्ट्री लगाने के खिलाफ हुए आन्दोलन में इन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, बहादुरी से पुलिस लाठी-चार्ज और कम्पनी गुण्डों की गोलीबारी का मुकाबला किया। अंततः आन्दोलन को गति दी जिससे कम्पनी को फैक्ट्री निर्माण का कार्य रोकने के लिए मजबूर होना पड़ा। कॉमरेड अशोक सिंह प्री-ग्रेजुएट हैं।

इन्द्रदेव राय : वैशाली

इन्द्रदेव राय एसयूसीआई(सी) बिहार राज्य कमेटी के सदस्य और मुंगेर जिला कमेटी के सचिव तथा ऑल इण्डिया डीवाईओ की राज्य संयोजक कमेटी के सदस्य हैं। अप्रैल 1983 को ये एआईडीएसओ में शामिल हुए थे। तब से ही इन्होंने अनेक आन्दोलनों में हिस्सा लिया और नेतृत्वकारी भूमिका निभाई। 1989-90 में तत्कालीन सरकार की शिक्षा-विरोधी नीतियों के खिलाफ वाम-जनवादी छात्र व युवा संगठनों के मोर्चे द्वारा संचालित राज्य स्तरीय संयुक्त आन्दोलनों में कॉमरेड राय ने एआईडीएसओ का प्रतिनिधित्व करते हुए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 2003 में बीआरए बिहार यूनिवर्सिटी द्वारा बेतहाशा फीस वृद्धि के खिलाफ आन्दोलन पर पुलिस ने भयंकर लाठीचार्ज किया था। आन्दोलन के दबाव में यूनिवर्सिटी प्रशासन को फीस घटाने के लिए मजबूर होना पड़ा था। वैशाली जिले में सघन आबादी वाले क्षेत्र पानापुर के नजदीक कैंसरजनक एसबेस्टस फैक्ट्री निर्माण का कार्य बन्द कर देना पड़ा। राय एमए और पत्रकारिता में पोस्ट ग्रेजुएट हैं।

प्रमोद कुमार : मुंगेर

प्रमोद कुमार एसयूसीआई(सी) बिहार राज्य कमेटी के सदस्य और मुंगेर जिला कमेटी के सचिव तथा एआईयूटीयूसी बिहार राज्य कमेटी के सचिव हैं। 1970 के दशक के आखिरी दौर से जमालपुर-मुंगेर क्षेत्र में जन-जीवन की विभिन्न समस्याओं को लेकर हुए आन्दोलनों जैसे सार्वजनिक कूँए पर कब्जे के खिलाफ, गैर-कानूनी शराब फैक्ट्री के खिलाफ, दलित बस्ती में विद्युतीकरण के लिए, सड़क निर्माण के लिए जामापुर नगर परिषद में होल्डिंग टैक्स में बेहताशा वृद्धि के खिलाफ और 2002 में तिलका माझी भागलपुर यूनिवर्सिटी में फीस वृद्धि के खिलाफ हुए आन्दोलन पर पुलिस गोलीबारी में एक व्यक्ति मारा गया और अनेक घायल हुए थे लेकिन अंततः आन्दोलन की जीत हुई और सरकार द्वारा फीस वृद्धि को वापिस लिया गया। कॉमरेड प्रमोद एमए एलएलबी हैं।

दीपक कुमार : बांका

दीपक कुमार एसयूसीआई (सी) भागलपुर सांगठनिक कमेटी के सदस्य हैं। 1993 से इन्होंने एआईडीएसओ द्वारा संचालित छात्र आन्दोलनों और सांस्कृतिक गतिविधियों में हिस्सा लिया है। 2002 में तिलका माझी भागलपुर यूनिवर्सिटी में बेतहाशा फीस वृद्धि के खिलाफ आन्दोलन गठित करने के लिए बनी विभिन्न वाम जनवादी छात्र संगठनों की छात्र संघर्ष कमेटी के संयोजक थे। इस छात्र आन्दोलन पर पुलिस की गोलीबारी में एक आदमी की मौत हो गई और अनेकं घायल हुए थे लेकिन अंततः आन्दोलन की जीत हुई और सरकार को फीस वृद्धि वापस लेनी पड़ी।

मध्य प्रदेश

सुनील गोपाल : ग्वालियर

जिवाजी यूनिवर्सिटी से लॉ ग्रेजुएट सुनील गोपाल पार्टी के ग्वालियर जिला सचिव हैं। छात्र जीवन से ही कॉमरेड शिवदास घोष के विचारों से प्रभावित होकर इस सरजमीन पर क्रान्तिकारी आन्दोलन विकसित करने में अपने को तहे दिल से समर्पित कर दिया। आपने शिक्षा के व्यापारीकरण, फीस वृद्धि और सरकार की अन्य जनविरोधी नीतियों के खिलाफ अनेक जनवादी संघर्षों में हिस्सा लिया है। जनवितरण प्रणाली में व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ इनके नेतृत्व में ही चलाया गया आन्दोलन कुछ मांगें हासिल करने में कामयाब हुआ था। नाबालिग लड़कियों से बलात्कार और यौन हमलों के खिलाफ सफल आन्दोलन को इन्होंने नेतृत्व दिया जिसके चलते बहुत से अपराधी पकड़े गए और सख्त सजा दी गई। 'निर्भया'-'दामिनी' की नृशंस हत्या के प्रतिवाद में 3 जनवरी 2013 को पार्टी द्वारा आहूत सफल ग्वालियर बन्द को संगठित करने में इन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

जे.सी. बरई : भोपाल

जे सी बरई 1978 में पार्टी में आए और 1985 में राज्य सांगठनिक कमेटी के सदस्य बन गए। भोपाल जहरीली गैस काण्ड संघर्ष मोर्चा द्वारा छेड़े गए आन्दोलनों में एक महत्वपूर्ण संगठक की भूमिका इन्होंने बखूबी निभाई। भोपाल गैस त्रासदी के बाद यह मोर्चा पार्टी की पहल पर बना था। 1997 में ये भोपाल जिला सचिव बनाए गए। ये भोपाल में एआईयूटीयूसी से सम्बद्ध भेल लेबर यूनियन के संस्थापक सदस्य हैं और इसके सचिव चुने गए। ट्रेड यूनियन गतिविधियों की वजह से ये 3.5 साल तक निलम्बित रहे। ये एआईयूटीयूसी की नेशनल कॉऊसिल के सदस्य और बाद में बैंगलोर कांफ्रेंस में इन्हें नेशनल वर्किंग कमेटी में शामिल किया गया।

झारखण्ड

सीताराम टुडू : जमशेदपुर

मोसाबनी कॉपर माइन वर्कर सीताराम टुडू 1976 से पार्टी से जुड़े हैं। वहाँ बलास्टरों के जीवन भर नाईट ड्यूटी को बन्द कराने के लिए दिवंगत नेता कॉमरेड प्रीतिश चन्दा द्वारा जो आन्दोलन शुरू किया गया था उसमें कॉमरेड टुडू आगुआ संगठक थे। आन्दोलन की जीत हुई और ये मजदूरों के सर्वमान्य नेता के रूप में उभरे और बाद में अनेक मजदूर आन्दोलनों से जुड़े रहे। मालिकों द्वारा बहुत से अन्य नेताओं को खरीद लिया गया लेकिन वे कॉमरेड सीाराम टुडू के साथ ऐसा नहीं कर सके। उनके संघर्षशील एवं बेदाग चरित्र तथा उनकी परिवारिक पृष्टभूमि ने उन्हें आदिवासी लोगों का हरदिल अजीज नेता बना दिया। अनेक बार अन्य बुर्जुआ पार्टियों द्वारा संसदीय पद का प्रलोभन देकर लुभाने की कोशिश की गई लेकिन पार्टी के संघर्ष को आगे ले जाने की अपनी प्रतिज्ञा पर ये अडिग रहे।

राम लाल महतो : राँची

झारखण्ड राज्य सांगठनिक कमेटी के सदस्य रामलाल महतो 1974 से पार्टी से जुड़े हुए हैं। आप ने बोकारो के चन्दन क्यारी क्षेत्र में जेपी आन्दोलन की अगुआई की थी। पार्टी जीवन के शुरूआत से ही आप गरीब किसान-खेतिहर मजदूरों के संघर्ष करते रहे हैं। एक सरकारी स्कूल में अध्यापक की नौकरी करते हुए ही आपने निडर होकर राजनीतिक गतिविधियों को जारी रखा और अंततः आपकी नौकरी चली गई। फिर भी आपने संघर्ष जारी रखा। जब एक एसयूसीआई(सी) समर्थक इलैक्ट्रो वर्कर पुलिस गोलीबारी में मारा गया तो आपने उसके विरोध में हुए आन्दोलन का नेतृत्व किया। राँची में एसयूसीआई(सी) के एक प्रदर्शन पर हुए पुलिस अत्याचारों का आपने साहस के साथ मुकाबला किया और गम्भीर रूप से घायल हो गए। झुग्गी वासियों की जबरन बेदखली के खिलाफ आन्दोलन में आप गहराई से जुड़े रहे हैं।

छत्तीसगढ़

आत्माराम साहू : दुर्ग

आत्माराम साहू 2002 में पार्टी में शामिल हुए। एसयूसीआई(सी) दुर्ग जिला सांगठनिक कमेटी के सदस्य और एआईडीएसओ के राज्य इंचार्ज हैं। इन्होंने विभिन्न

(शेष पृष्ठ 6 पर)

आगामी लोकसभा चुनाव में ...

(पृष्ठ 5 का शेष)

छात्र आन्दोलन का नेतृत्व किया है, अनेक जनवादी जन-आन्दोलनों में हिस्सा लिया है और पार्टी के एक सक्रिय कार्यकर्ता है।

गुजरात

तपन दासगुप्ता : बडोदरा

अपने छात्र जीवन से ही तपन दासगुप्ता बडोदरा में नागरिक संघर्ष मंच से घनिष्ठ रूप से जुड़े रहे हैं और महंगाई, बेरोजगारी, महिलाओं पर अत्याचारों के खिलाफ तथा मजदूर-किसानों के अधिकारों की खातिर जनता के जनवादी आन्दोलनों में अगुआ भूमिका निभाते रहे हैं। भ्रष्टाचार-विरोधी आन्दोलन में वदोदरा के छात्र-नौजवानों को जुटाने में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। मूवमेण्ट फॉर सैक्यूलर डैमोक्रेसी (एमएसडी), पीयूसीएल, वदोदरा शान्ति अभियान 2002 जैसे विभिन्न नागरिकों मंचों के लिए आपने निष्ठापूर्वक कार्य किया है। गुजरात भूकम्प दक्षिण में सुनामी, बडोदरा और सूरत की बाढ़, हाल ही में उत्तराखण्ड की ध्वंसलीला के पीड़ितों के लिए राहत कार्यों में आपने जी-जान से काम किया है। जनआन्दोलन में उच्च नीति-नैतिकता और चरित्र को बरकरार रखने पर आप निरन्तर जोर देते रहे हैं। इसके लिए आप सभी के श्रद्धापात्र बने हैं। कॉरपोरेट और पूंजीवाद के गुजरात विकास मॉडल के खिलाफ 'भयमुक्त गुजरात और भ्रान्ति मुक्त भारत' के एक सिपाही के तौर पर कॉमरेड तपन दासगुप्ता इस क्षेत्र से लोकसभा चुनाव लड़ रहे हैं।

उत्तर प्रदेश

शेषनाथ तिवारी : प्रतापगढ़

आपका सम्पर्क 2009 में ऑल इण्डिया यूटीयूसी से हुआ। गाँव में रहते हुए 2012 में आपको ऑल इण्डिया केकेएमएस के जिलाध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई। कॉ. तिवारी एआईकेकेएमएस के बैनर तले चलाए जा रहे आन्दोलनों में महत्वपूर्ण भमिका निभा रहे हैं। वर्तमान समय में ढकलस स्थानीय कमेटी में रहकर पार्टी के कामों में संलग्न हैं।

रविशंकर मौर्या : जौनपुर

रवि शंकर मौर्या एसयूसीआई(सी) यूपी राज्य कमेटी के सदस्य और ऑल इण्डिया डीवाईओ के राज्य सचिव हैं। 1995 में छात्र संगठन ऑल इण्डिया डीएसओ के सम्पर्क में आए। आपने कुशवाह बाजार में मुंशी प्रेमचन्द के नाम से एक पुस्तकालय शुरू किया। मल्लूपुर स्थानीय कमेटी में रहते हुए पार्टी का काम भी शुरू किया। पार्टी द्वारा निर्मित जन आन्दोलनों में बढ़-चढ़ कर भाग लेते रहे हैं। (शेष अगले अंक में)

कॉमरेड शिवलाल प्रसाद लाल सलाम!

पटना में सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. शिव शंकर

पटना। एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) बिहार राज्य कमेटी के वरिष्ठ सदस्य तथा राज्य कार्यालय सचिव और मजदूर संगठन ऑल इंडिया यूटीयूसी के बिहार राज्य उपाध्यक्ष कॉमरेड शिवलाल प्रसाद का देहांत 10 मार्च, को जगदेव पथ, पटना स्थित उनके निवास पर शाम 4: 30 बजे हृदय गति रुक जाने से हो गया। वे 83 वर्ष के थे। कॉ. शिवलाल प्रसाद के देहांत की खबर से पार्टी कॉमरेडों और समर्थकों में शोक की लहर दौड़ गयी। राज्य कार्यालय सहित सभी जिला कार्यालयों में लाल झंडे को झुका दिया गया। अगले दिन 11 मार्च को कॉ. शिवलाल प्रसाद के शव को एसयूसीआई (सी) राज्य कार्यालय, नाला रोड लाया गया। शव के आते ही वहां मौजूद तमाम कॉमरेडों की आंखें छलक पड़ीं। वहां कॉ. शिवलाल प्रसाद के शव पर पार्टी के राज्य सचिव कॉ. शिव शंकर, राज्य कमेटी के वरिष्ठ सदस्य कॉ. अरूण कुमार सिंह, सीपीआई के कॉ. नारायण पूर्वे, सीपीआई(एम) के कॉ. गणेश प्रसाद सिंह, सीपीआई (एम-एल) लिबरेशन के आर.एन ठाकुर, ऑल इंडिया फारवर्ड ब्लॉक के कॉ. वकील ठाकुर, कॉ. दिनेश सिंह, कॉ. रामबाबू सिंह तथा कॉ. रघुनाथ गांधी, सीपीआई(एमएल) के नन्द किशोर सिंह, अखिल हिन्द फॉरवर्ड ब्लॉक (क्रांतिकारी) के कॉ. बालगोविन्द सिंह, कम्युनिस्ट सेंटर ऑफ इंडिया के कॉ. सतीश तथा कम्युनिस्ट सेंटर फॉर साइंटिफिक सोशलिज्म के कॉ. नरेन्द्र कुमार ने मार्ल्यापण कर अपनी श्रद्धांजली अर्पित की। एसयूसीआई(सी) राज्य कमिटी सदस्य सह पटना जिला सचिव कॉ. साधना मिश्रा, राज्य कमिटी सदस्य सह मुजफ्फरपुर जिला सचिव कॉ. अर्जुन कुमार, राज्य कमिटी सदस्य सह मुंगेर जिला सचिव कॉ. प्रमोद कुमार, राज्य कमेटी सदस्य सह वैशाली जिला सचिव कॉ. ललित कुमर घोष, राज्य कमेटी सदस्य सह जहानाबाद जिला इंचार्ज कॉ. उमा शंकर वर्मा, राज्य कमेटी सदस्य कॉ. दीपक कुमार, कॉ. इन्द्रदेव राय, कॉ. सूर्यकर जितेन्द्र तथा कॉ. राजकुमार चौधरी ने मार्ल्यापण कर अपनी श्रद्धांजली अर्पित की। कॉ. शिवलाल प्रसाद के शव पर ऑल इंडिया कृषक खेत मजदूर संगठन के राज्य सचिव तथा एसयूसीआई(सी) राज्य कमेटी सदस्य कॉ. अशोक कुमार सिंह, ऑल इंडिया यूटीयूसी के राज्य उपाध्यक्ष तथा एसयूसीआई(सी) राज्य कमेटी सदस्य कॉ. एम. के. पाठक, ऑल इंडिया डीएसओ के राज्य सचिव अनिल कुमार, ऑल इंडिया डीवाईओ के अनिल कुमार चांद व ऑल इंडिया महिला सांस्कृतिक संगठन की अनामिका आदि ने मार्ल्यापण कर अपनी श्रद्धांजली दी। साथ ही एसयूसीआई(सी) अरवल जिला इंचार्ज कॉ. रूपेश कुमार, भवन निर्माण मजदूर यूनियन के अवधेश कुमार व बैद्यनाथ शर्मा, जेपीए के अरूण कुमार, आर एन झा, पुष्पराज, मधुर कुमार आदि ने भी कॉ. शिवलाल प्रसाद के शव पर मार्ल्यापण किया। शव यात्रा में पार्टी के सैकड़ों नेता-कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। शव यात्रा की शुरूआत सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष पर रचित गीत से हुई। शव यात्रा बांसघाट पहुंचने पर अंतर्राष्ट्रीय गीत के साथ तमाम कॉमरेडों ने कॉ. शिवलाल प्रसाद को अपना अंतिम लाल सलाम पेश किया।

19 मार्च को स्थानीय आईएमए हॉल में कॉ. शिवलाल प्रसाद की श्रद्धांजली सभा की गयी। कॉ. शिवलाल प्रसाद को अपनी श्रद्धांजली अर्पित करते हुए एसयूसीआई (सी) राज्य कमेटी के वरिष्ठ सदस्य अरूण कुमार सिंह ने कहा कि कॉ. शिवलाल प्रसाद साठ के दशक के शुरूआती वर्षों में मशहूर मजदूर नेता तथा एसयूसीआई(सी) के पूर्व पोलित ब्यूरो सदस्य कॉ. प्रीतीश चंदा के माध्यम से मार्क्सवाद-लेनिनवाद तथा सर्वहारा के महान नेता व इस युग के महान मार्क्सवादी चिंतक कॉमरेड शिवदास घोष के विचारों के सम्पर्क में आये। साठ के दशक के रेल आंदोलन तथा 1974 की रेल हड़ताल में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। वे जीवन के अंतिम क्षण तक मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष विचार पर चलते रहे। वे परिवार में रहते हुए भी पार्टी के काम को ज्यादा प्राथमिकता देते थे।

सभा अध्यक्ष एसयूसीआई(सी) के बिहार राज्य सचिव कॉ. शिव शंकर ने कहा कि कॉ. शिवलाल प्रसाद ने खुद को सही कम्युनिस्ट बनाने के लिए सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष द्वारा दिखाये रास्ते पर चलते हुए जीवन के तमाम पहलुओं को समेट कर संघर्ष किया। उनके निधन से जो शून्यता पैदा हुई है, जो क्षति हुई है, उसे पूरा करने के संघर्ष में खुद को शामिल करना ही शिवलाल प्रसाद के प्रति सच्ची श्रद्धांजली होगी। अपनी श्रद्धांजली अर्पित करते हुए एसयूसीआई(सी) की झारखंड राज्य कमिटी के सदस्य कॉ. के. पी. सिंह ने कहा कि कॉ. शिवलाल प्रसाद सिद्धांत के मामले में कभी समझौता नहीं करते थे। व्यक्तिगत और सामाजिक स्वार्थ के बीच अंतरद्वन्द्व में वे हमेशा सामाजिक स्वार्थ को अधिक महत्व देते थे।

सीपीआई के राज्य सचिव मंडल सदस्य चक्रधर प्रसाद सिंह ने श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए कहा कि कॉमरेड प्रसाद मार्क्सवाद-लेनिनवाद को आधार बनाकर समाजवाद के रास्ते पर चल रहे थे। सीपीआई(एम-एल) लिबरेशन के आर. एन. ठाकुर ने उनको अपनी श्रद्धांजली देते हुए कहा कि कॉमरेड शिवलाल प्रसाद अपने सिद्धांत के मामले में कभी भी समझौता नहीं करते थे। ट्रेड यूनियन और पार्टी की संयुक्त बैठकों में यह बात साफ देखने को मिलती थी। एमसीपीआई (यू) के राज्य सचिव कॉ. विजय कुमार चौधरी ने कॉमरेड शिवलाल प्रसाद को अपनी श्रद्धा अर्पित करते हुए कहा कि उनके आचरण में एक सही कम्युनिस्ट की झलक मिलती थी। ऐसे कम्युनिस्ट बहुत कम देखने को मिलते हैं। सीपीआई(एम-एल) के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य कॉ. अरविन्द सिन्हा ने कहा कि कॉमरेड शिवलाल प्रसाद शोषित जनता के संघर्ष के समर्पित सिपाही थे। उन्हें जो ताकत मिलती थी, वह मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सही पकड़ से ही संभव है। कम्युनिस्ट सेंटर ऑफ इंडिया के सतीश ने कहा कि कॉ. शिवलाल प्रसाद जैसा संघर्षपूर्ण जीवन हमें भी जीने की जरूरत है। राज्य किसान आयोग के अध्यक्ष सी. पी. सिन्हा ने अपनी श्रद्धांजली देते हुए कहा कि अपने विचारों पर अडिग रहने वाले शिवलाल प्रसाद अपने पारिवारिक और निजी मामलों को हमेशा गौण रखते थे। ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस के नेता गजनफर नवाब ने कॉ. शिवलाल प्रसाद को श्रद्धांजली देते हुए कहा कि उनके अनुभव और प्रेरणा से मजदूर आंदोलन को जो लाभ मिलता रहा, वह निकट भविष्य में मिलता दिखाई नहीं पड़ता। वे अपने विचारों के प्रति प्रतिबद्ध, समर्पित और दृढ़ थे। पूर्व शिक्षक आर. एन. झा ने अपनी श्रद्धांजली अर्पित करते हुए कहा कि वे आदमी द्वारा आदमी के शोषण को समाप्त करने के संघर्ष में शामिल थे। इसके अलावा कम्युनिस्ट सेंटर ऑफ इंडिया के कॉ. पार्थ सरकार, सीपीआई (एम-एल) के नन्द किशोर सिंह, एसयूसीआई (सी) राज्य कमेटी सदस्यों-कॉमरेड्स एम.के. पाठक, अशोक कुमार सिंह, प्रमोद कुमार, योगेन्द्र राय, इन्द्रदेव राय, साधना मिश्रा, अर्जुन कुमार, ललित कुमार घोष, राजकुमार चौधरी, सूर्यकर जितेन्द्र, उमा शंकर वर्मा ने कॉ. शिवलाल प्रसाद की तस्वीर पर मार्ल्यापण कर अपनी श्रद्धांजली दी। ऑल इंडिया डीएसओ के राज्य सचिव अनिल कुमार, कर्मचारी संगठन जेपीए के नेता अरूण कुमार, भवन निर्माण मजदूर यूनियन के अवधेश कुमार व बैद्यनाथ शर्मा, सांस्कृतिक कर्मी मन्मथो राय ने भी कॉ. शिवलाल प्रसाद की तस्वीर पर श्रद्धा-सुमन अर्पित किये। श्रद्धांजली सभा की शुरूआत सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष पर रचित गीत से तथा समापन अंतर्राष्ट्रीय गीत से हुआ।

कॉमरेड शिवलाल प्रसाद लाल सलाम!

23 मार्च –

(पृष्ठ 2 का शेष)

पहितियापुर गाँव में शाम को स्कूली बच्चों व छात्र संगठन ऑल इण्डिया डी.एस.ओ के कार्यकर्ताओं द्वारा एक विशाल केण्डिल मार्च निकाला गया जो पूरे गाँव की परिक्रमा करते हुए गाँव में स्थित भगत सिंह की मूर्ति तक गया। भगत सिंह की मूर्ति पर माल्यार्पण कर सभा की जिसमें गाँव के नागरिकों सहित भारी संख्या में महिलाएं भी शामिल हुई। सभा की अध्यक्षता कॉ. हीरालाल गुप्त व संचालन कॉ. दिलीप कुमार ने किया। कॉ. अशोक कुमार खरवार, अनीता गुप्ता ने अपने विचार रखे और सविता, कविता, सपना इत्यादि ने क्रान्तिकारी गीत प्रस्तुत किए।

जौनपुर शहर में एक विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ। संचालन कॉ. विकास कुमार मौर्य ने किया। कॉ. महेन्द्र कुमार मौर्य, विजय कुमार मौर्य, शान्ति मौर्य व किरन चौहान ने अपने विचार रखे।

बबुरा गाँव में एक आम सभा की गई जिसकी अध्यक्षता कॉ. रामप्यारे (एडवोकेट) व संचालन कॉ. मनोज विश्वकर्मा ने किया। कॉ. राधेश्याम चौबे, राजेन्द्र प्रसाद, जगन्नाथ, रघुनाथ, बैजनाथ ने अपने विचार रखे और स्कूली बच्चों ने क्रान्तिकारी गीत व कविताएं सुनाई।

ऊदपुर गेल्हवा में भी एक नागरिक सभा की गई। अध्यक्षता भानुप्रताप सिंह व संचालन कॉ. बांकेलाल ने किया। सभा को कॉ. प्रमोद कुमार शुक्ल, राजेन्द्र प्रसाद तिवारी, सुरेन्द्र शर्मा, राकेश निषाद, रामजी सिंह सुखराज इत्यादि ने सम्बोधित किया।

मिश्रौली गाँव में शहीद दिवस पर सभा की गई। अध्यक्षता श्री सत्यदेव दूबे व संचालन बबलू दूबे ने किया। कॉ. रविशंकर मौर्य, इन्द्र कुमार शुक्ल, राज दूबे, अमरनाथ दूबे ने सम्बोधित किया और कॉ. दिनेश मौर्य ने क्रान्तिकारी गीत गाए। उपरोक्त सभी कार्यक्रमों में शहीद भगत सिंह की तस्वीर पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी गई।

जोया (जे.पी. नगर): कृषक नगर (अमरोहा) में 23 मार्च को शहीद भगतसिंह का शहादत दिवस जोशो-खरोश से मनाया गया। इस अवसर पर हुई जनसभा की अध्यक्षता पार्टी के अमरोहा जिला इंचार्ज कॉ. शील कुमार ने की। सभा के मुख्य वक्ता थे पार्टी की उत्तर प्रदेश स्टेट कमेटी के वरिष्ठ सदस्य कॉ. बेचन अली। सभा का संचालन पार्टी के अमरोहा जिला यूनिट के सदस्य व जिला अमरोहा डीवाईओ के अध्यक्ष कॉ. पवन कुमार ने किया।

सबसे पहले सभा अध्यक्ष व मुख्य वक्ता ने और फिर सभा में उपस्थित सभी साथियों ने शहीद भगतसिंह के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। तत्पश्चात कॉ. शील कुमार ने शहीद भगत सिंह पर स्वरचित क्रान्तिकारी गीत गाया। कॉ. बेचन अली ने बताया कि दुनिया में वे ही लोग महान कहलाए हैं जिन्होंने अपने दुख को समाज के दुख के साथ मिलाते हुए संघर्ष किया, जिन्होंने समाज के स्वार्थ में ही अपना स्वार्थ समझा, जिन्होंने शोषण-उत्पीड़न जैसी बुराइयों के खिलाफ संघर्ष में जीवन लगा दिया। सभी ने साथ मिल कर संगठन व पार्टी को और अधिक मजबूत करने का संकल्प लिया।

बेगूसराय (उ.प्र.) : तेतरी में 26 मार्च को डीवाईओ की ओर से हुई सभा में शहीदों को याद किया गया।

इंदौर (म.प्र.) : शहीद भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव के शहीदी दिवस पर यहां रेसिडैंसी पार्क में शहीद भगत सिंह विचार मंच की ओर से 23 मार्च को श्रद्धांजली सभा की गई और बुक स्टाल व उनके कथनों की प्रदर्शनी भी लगाई गई। मंच के कार्यकर्ताओं व आम लोगों ने शिद्दत के साथ शहीदों को याद किया।

मुम्बई में सभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड प्रतिभा नायक

मुम्बई (महाराष्ट्र): इस अवसर पर 23 मार्च को संघर्ष नगर, चांदीविली अंधेरी (ईस्ट) मुम्बई में एक जनसभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता महाराष्ट्र राज्य डीवाईओ के संगठक कॉमरेड जयराम विश्वकर्मा ने की। ऑल इण्डिया डीवाईओ की अखिल भारतीय सचिव कॉमरेड प्रतिभा नायक सभा की मुख्य वक्ता थी। अन्य वक्ताओं में मुम्बई सांगठनिक कमेटी एसयूसीआई(सी) के सचिव कॉमरेड एक.के.त्यागी, मुम्बई कमेटी डीवाईओ के सचिव कॉमरेड दत्तु काजले तथा मुम्बई डीवाईओ के कॉ. एम. डब्ल्यू हुसैन प्रमुख थे। कॉमरेड प्रतिभा नायक ने अपने भाषण में लोगों से आह्वान किया कि वे शहीद भगत सिंह के विचारों और चरित्र को नौजवानों के अन्दर पनपाएं ताकि असामाजिक व्यवहार और नजरिए, भ्रष्टाचार, नीतिहीन राजनीति, बलात्कार, सामूहिक बलात्कार आदि जैसे सांस्कृतिक पतन का मुकाबला किया जा सके। कॉ. नायक ने बताया कि डीवाईओ स्पोर्ट्स क्लब के बैनर तले कॉमरेड विवेकानन्द चह्वान की पहल पर मुम्बई में जूडो-कराटे सिखाने के माध्यम से डीवाईओ ने आत्मरक्षा प्रोग्राम शुरू किया है। ऑल इण्डिया डीवाईओ द्वारा अखिल भारतीय पैमाने पर भी आत्मरक्षा प्रोग्राम की पहल की गई है। कॉमरेड त्यागी ने नौजवानों से अपील की कि वे आजादी आन्दोलन के इतिहास, विशेषकर महात्मा गांधी की समझौतावादी धारा और शहीद भगत सिंह जैसे क्रान्तिकारियों की गैर समझौतावादी धारा के बारे में गहराई से जानें। इतिहास की सही समझ होने से ही हम मौजूदा समस्याओं का सही हल खोजने में सक्षम होंगे। सभा के अंत में मिस्टर मुश्ताक अहमद और मेडम शिल्पा शेरीगर की अगुआई में ऑल इण्डिया जूडो-करोटे महानुभावों द्वारा स्टेज पर जूडो-कराटे का प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम ने उपस्थित नौजवानों में उत्साह का संचार किया।

तोशाम (हरियाणा) : शहीद भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव के शहीदी दिवस पर यहां भारत आइस फैक्टरी के सामने एआईडीएसओ की ओर से 23 मार्च को श्रद्धांजली सभा की गई। सभा की अध्यक्षता बस्तीराम ने की और मुख्य वक्ता एसयूसीआई के जिला सचिव कॉ. रामफल थे। सभा की कार्रवाई का संचालन नवीन ने किया। अजय सैनी ने एक कविता सुनाई। कार्यक्रम में उपस्थित मंच के कार्यकर्ताओं व आम लोगों ने शिद्दत के साथ शहीदों को याद किया।

ताऊडू (हरियाणा) : 23 मार्च को शहीद-ए-आजम भगतसिंह राजगुरु, सुखदेव के शहादत दिवस के अवसर पर ताऊडू शहर में मशाल जुलूस निकाला गया। जुलूस का नेतृत्व डीवाईओ के स्थानीय इंचार्ज कॉ. बृजमोहन व डीएसओ के सदस्य कुलदीप सैनी ने किया। मशाल जुलूस छोटूराम पार्क से शुरू हुआ, पटौदी रोड, नए बस स्टैण्ड, विजय चौक, लखपत चौक, पुराना बस स्टैण्ड व जटवाड़ा मौहल्ला से होते हुए सम्पन्न हुआ। इसमें भारी संख्या में छात्र-नौजवानों ने हिस्सा लिया।

मशाल जुलूस में शामिल छात्र-युवाओं को सम्बोधित करते हुए कॉ. बृजमोहन ने कहा कि आज भगतसिंह, राजगुरु व सुखदेव को हम ऐसे समय में याद कर रहे हैं जब भयंकर महंगाई और बेरोजगारी फैली हुई है, शिक्षा-इलाज जैसी सेवाओं को निजी हाथों बेचा जा रहा है, चौतरफा सांस्कृतिक पतन व्याप्त है, महिलाओं पर जुल्म-अत्याचार हो रहे हैं, किसान आत्महत्या कर रहे हैं और फैक्ट्रियों में मजदूरों का बुरा हाल है। इन तमाम समस्याओं से मेहनतकश इन्सान जूझ रहा है। आजाद भारत में किसान-मजदूरों का राज होगा, एक व्यक्ति दूसरे का शोषण नहीं करेगा, भगत सिंह का यह सपना आज भी अधूरा है। हमें छात्र-युवाओं को संगठित करते हुए क्रान्तिकारी संगठन डीएसओ व डीवाईओ को मजबूत करना होगा तभी हम उस सपने को पूरा कर सकते हैं।

बडोदरा (गुजरात): ऑल इण्डिया डीएसओ की जिला कमेटी की ओर से एमएस यूनिवर्सिटी में शहीद-ए-आजम भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू का शहादत दिवस मनाया गया। विभिन्न विभागों के छात्रों ने फोटो पर पुष्प अर्पित करके शहीदों को श्रद्धांजलि दी। बडोदरा जिला कमेटी के सचिव पार्थ पाण्डेय ने माल्यार्पण किया और सभा को सम्बोधित किया।

बडोदरा में शहीदों को श्रद्धांजली देते हुए छात्र

शहीद चन्द्रशेखर आजाद के शहादत दिवस पर रैली और सभा

अशोकनगर (म.प्र.): 27 फरवरी को डीवाईओ की उत्तर म.प्र. राज्य कमेटी ने रैली व जनसभा कर शहीद चन्द्रशेखर आजाद का शहादत दिवस मनाया। वे अशोकनगर शहर के पछारीखेड़ा मन्दिर पर तीन दिन रुके भी थे। शहीद आजाद के चित्र पर प्रो. एसएन सक्सैना, सुरेन्द्र रघुवंशी, लोकेश शर्मा, प्रदीप आरबी, अभय चिताम्बरे ने पुष्प अर्पित किए। डीवाईओ के अशोकनगर प्रभारी रामसिंह भदोरिया, इंदौर प्रभारी सौम्यां पंवार व भगतसिंह यादगार मंच के वरिष्ठ सदस्य प्रो. एसएन सक्सैना ने भी आजाद के जीवन-संघर्ष पर बात रखी। सांस्कृतिक कार्यक्रम में अनुराग, नन्दिनी, भूरेलाल व अन्य साथियों ने जनगीतों की प्रस्तुति की। मुख्य वक्ता क्रान्तिकारी पार्टी एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के ग्वालियर जिला सचिव कॉ. सुनील गोपाल रहे। सेव एजुकेशन कमेटी के सदस्य सुरेन्द्र रघुवंशी, एसयूसीआई(सी) के अशोक नगर प्रभारी कॉ. सचिन जैन और डीवाईओ की ऑल इण्डिया काऊन्सिल सदस्य प्रतिज्ञा मांझी ने भी सभा को सम्बोधित किया। सभा की अध्यक्षता डीवाईओ के अखिल भारतीय सचिव मण्डल सदस्य और म. प्र. राज्य प्रभारी कॉ. लोकेश शर्मा ने की। कार्यक्रम का संचालन राज्य कमेटी सदस्य और डीवाईओ के शिवपुरी प्रभारी सुरेन्द्र कुमार ने किया। सभा के समापन पर डीएसओ के साथियों ने नुक्कड़ नाटिका 'बुत जाग उठा'' का मंचन किया। कार्यक्रम में आरोन, गुना, इंदौर, ग्वालियर, शिवपुरी व अशोकनगर के छात्र-युवा शामिल हुए।

गुना (म.प्र.): 28 फरवरी को शहीद चन्द्रशेखर आजाद के शहादत दिवस के अवसर पर बूढ़े बालाजी क्षेत्र (जोगी मौहल्ला) में एसयूसीआई (सी) की सेल कमेटी की ओर से जनसभा का आयोजन किया गया। सभा में मुख्य वक्ता बूढ़े बालाजी क्षेत्र की एसयूसीआई(सी) की लोकल कमेटी प्रभारी संगीता आर.बी. रहीं। सेल प्रभारी योगेश धाकड़ ने भी बात रखी। सभा संचालन सेल कमेटी सदस्य विकास बंसल ने किया।

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly, Date of Printing : 5 April, 2014

कार्ल मार्क्स स्मृति दिवस पर जगह – जगह कार्यक्रम आयोजित

इलाहाबाद (उ.प्र.) : 14 मार्च को विश्व सर्वहारा के महान नेता कार्ल मार्क्स स्मृति दिवस के अवसर पर एसयूसीआई(सी) की ओर से इलाहाबाद के अल्लापुर क्षेत्र में मार्क्सवादी अॅथोरिटियों के उद्धरणों की प्रदर्शनी व बुकस्टाल आयोजित की गई।

तमिलनाडु में हुई कार्ल मार्क्स स्मृति सभा

झारखण्ड में पार्टी के राज्य कार्यालय का उद्घाटन

रांची : 14 मार्च को दुनिया के मेहनतकश आवाम के मुक्ति संग्राम के दिशा निर्देशक कार्ल मार्क्स स्मृति दिवस के अवसर पर हमारी पार्टी एसयूसीआई(सी) के राज्य कार्यालय के उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया। यह उद्घाटन समारोह राँची रेलवे स्टेशन के समीप लोअर चुटिया, शिवपुरी (कोलपाड़ा) में दोपहर 2 बजे से आरम्भ हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता एसयूसीआई(सी) के झारखण्ड राज्य सचिव कॉमरेड रबीन समाजपति ने किया। कार्यालय का उद्घाटन एसयूसीआई (सी) के सेण्ट्रल कमेटी व पोलिट ब्यूरो सदस्य और इस उद्घाटन समारोह के मुख्य वक्ता कॉ. रंजीत धर के हाथों कराया गया। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि विश्व सर्वहारा के महान नेता कार्ल मार्क्स ने कहा था कि पूँजीवाद तथा पूँजी का शासन ही आम जनता के हर प्रकार के शोषण व दुख-तकलीफों की मूल जड़ है और इसके खात्मे के लिए इस पूँजीवाद को उखाड़ फेंक कर शोषणहीन समाज कायम करने की जरूरत है। यह काम हमें ही करना होगा। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ दिनों से जो लोकसभा चुनाव की लहर चल रही है इसमें सभी पार्टियाँ पूँजीपतियों से करोड़ों, अरबों रुपए चन्दा लेकर धन बल, बाहुबल, व प्रचार माध्यम के बल को अपने जीतने का हथियार बना रहे हैं। लेकिन भारत की एकमात्र क्रान्तिकारी पार्टी एसयूसीआई(सी) चुनाव को एक आन्दोलन के रूप में देखती है। हमारी दृष्टि से यह चुनाव भी गरीबों व अमीरों के बीच की एक लड़ाई है। हम पूँजीपतियों से नहीं बल्कि जनता से पैसा एवं समर्थन चाहते हैं क्योंकि पूँजीपतियों से पैसा लेकर जनता के हितों की रक्षा कभी नहीं की जा सकती। हमारी पार्टी गरीबों की पार्टी है। इसके अलावा एसयूसीआई (सी) केन्द्रीय कमेटी सदस्य कॉमरेड छाया मुखर्जी ने कहा कि हमें उम्मीद है कि यह कार्यालय सदा ही झारखण्ड में जनता के आन्दोलन के केन्द्र के रूप में काम करेगा। बिहार राज्य कमेटी के सचिव कॉमरेड शिवशंकर व बिहार राज्य कमिटी के वरिष्ठ सदस्य कॉमरेड अरुण सिंह ने भी इस मौके पर अपनी हार्दिक शुभकामनाएं दी। इसके पश्चात कार्यक्रम का समापन अन्तर्राष्ट्रीय गीत गाकर किया गया।

राज्य कार्यालय के उद्घाटन के अवसर पर सभा को सम्बोधित करते हुए मुख्य वक्ता कॉ. रंजीत धर

बिहार में वाम मोर्चे ने की अपने उम्मीदवारों को जिताने की अपील

एसयूसीआई(कम्युनिस्ट), सीपीआईएमएल, एमसीपीआई (यू), फॉरवर्ड ब्लॉक(क्रांतिकारी), पीआरसी-सीपीआई(एमएल), सीसीआई के बिहार राज्य स्तरीय नेताओं की एक बैठक एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के राज्य कार्यालय, नाला रोड, पटना में एमसीपीआई (यू) के राज्य सचिव विजय कुमार चौधरी की अध्यक्षता में हुई। बैठक में वर्तमान लोकसभा चुनाव के संदर्भ में गंभीर चर्चा हुई और एक साझा बयान प्रसारित करने का निर्णय लिया गया। इसमें कहा गया है कि 16वीं लोकसभा के चुनाव के इस महत्वपूर्ण मौके पर बिहार में कार्यरत छः क्रांतिकारी, वामपंथी व जनवादी दलों ने एक साथ मिल कर चुनाव अभियान चलाने का निर्णय लिया है। हम आम जनता का आह्वान करते हैं कि वह भाजपा-नीत एनडीए और कांग्रेस-नीत यूपीए को पराजित करें। क्षेत्रीय दलों एवं संसदीय वाम दलों के गठजोड़ वाले तीसरे मोर्चे का पर्दाफाश करते हुए उन्हें नकार दें। चुनाव में खड़े क्रांतिकारी, प्रगतिशील, जनवादी एवं जनपक्षीय संघर्षशील प्रत्याशियों को चुनाव में विजयी बनायें। बिहार में हम निम्नलिखित पांच उम्मीदवारों के पक्ष में चुनाव प्रचार करने का एलान करते हैं और बिहार के मतदाताओं से अपील करते हैं कि उन्हें जिताने में सहयोग करें।

लोकसभा क्षेत्र का नाम, प्रत्याशी और पार्टी ये हैं : पटना साहिब से नंद किशोर सिंह, सीपीआई(एमएल), वैशाली से इंद्रदेव राय, एसयूसीआई(कम्युनिस्ट), मुजफ्फरपुर से अशोक कुमार सिंह, एसयूसीआई (कम्युनिस्ट), मुंगेर से प्रमोद कुमार, एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) और बांका से दीपक कुमार, एसयूसीआई (कम्युनिस्ट)।

छात्रा की हत्या के अभियुक्तों की गिरफ्तारी की मांग पर तहसील मुख्यालय पर धरना एवं प्रदर्शन

पट्टी, प्रतापगढ़ (उ.प्र.) : छात्रा के हत्यारों को तुरंत गिरफ्तार करने की मांग को लेकर 25 फरवरी को जन कल्याण संघर्ष समिति प्रतापगढ़ के बैनर तले एक जुलूस बाबा रामचन्दर नगर से उड़ैयाडीह रोड से मुख्य मार्ग होते हुए तहसील मुख्यालय पहुंच कर सभा में तब्दील हो गया। सभा की अध्यक्षता समिति के जिला संयोजक राजमणि विश्वकर्मा ने की। सभा के मुख्य वक्ता समिति के प्रांतीय संरक्षक कॉ. वी.एन. सिंह थे।

सभा को समाजसेवी प्रेमशंकर पाण्डेय, प्रमोद कुमार शुक्ल, कॉ. बेचन अली, रविशंकर मौर्य, मंजू मौर्य, आरती विश्वकर्मा, शिक्षक शैलेन्द्र सिंह, राम अभिलाष वर्मा, हाई कोर्ट के एडवोकेट राघवेन्द्र सिंह, मुन्ना सिंह आदि ने सम्बोधित किया। जुलूस का नेतृत्व राजमणि विश्वकर्मा, बद्री प्रसादमौर्य, डा. माणिक चंद मौर्य व रमाशंकर वर्मा ने किया। सभा

का संचालन कॉ. पुष्पेन्द्र विश्वकर्मा ने किया। सभा के अंत में मुख्यमंत्री को सम्बोधित एक ज्ञापन प्रषित किया गया।

मोदी के खिलाफ चुनाव लड़ रहे तपन दासगुप्ता, नामांकन के लिए बडोदरा में लोगों से चंदा करते हुए

सरायकेला-खरसवा (झारखण्ड) में महिला दिवस पर सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. लिली

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) की ओर से कॉ. सत्यवान द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित। दूरभाष : 011-25726631, Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com